JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रसाद र्ी र्विताओं मनोभाि

नाम-नरेंद्र
शोधार्थी, ह दिं ी विभाग
ददल्ली विश्वविद्यालय, ददल्ली-110007
सिंपर्क सूत्र-9873598108
ई-मले-narenderl6@gmail.com

प्रसाद भारतीय सिंस्र्ृवत र्े प्रतीर् पुरुष ै। इन् ोंने िेद, परु ाण, इवत ास, साव त्य, दशकन शास्त्र र्ा ग न अध्ययन दर्या। प्राचीन र्ा युग सापक्षे निीन सिंस्र्ार इनर्ी र्विताओं र्ी म त्िपूण क उपलवधध ।ै अध्यावत्मर्, समन्ियशीलता, विश्वबिंधुत्ि, सिंयम, त्याग, बवलदान, देशभवि एिं राष्ट्रीयता प्रसाद र्ी र्विताओं र्े तत्ि ।ै र्विता र्वि र्े भाि र्ा प्रस्फुटन ै विसमें र्वि र्ी आर्ािंक्षा िेदना र्ुण्ठा स्ने आदश क आदद प्रर्ट ोत े ैं। र्विता म ें र्वि अपने पूि क र्े अनुभि र्ो भी शधद बध्द र्रता ै र्विता र्भीर्भी र्ल्पना र्े अनिंत सागरों में भी गोता लगाती ै तो र्भी-र्भी िास्तविर्ता र्ी चरम सीमा र्ो भी उद्घाटटत र्रती ै र्विता र्वि र्ी अनुपम र्ृवत ोती ै विसमें र्वि सामाविर्, सािंस्र्ृवतर्, रािनीवतर् पटरदश्ृ य पर टाक्ष भी र्रता ै र्विता र्भी नावयर्ा र्े सौंदयक र्ा आलोदर्त वचत्रण र्रती ैतो, र्भी प्रर्ृवत र्े अवितीय रिंगों, सुगिंधों,र्ी मो र्ता मादर्ता र्ो भी िर्णकत र्रती ।ै र्वि और उसी र्विता र्े सदिं भक म ें एर् र्थन प्रवसद्ध ै-

"ि ाि न पहचिं े रवि ि ाि
पहचिं े र्वि"

अर्थाकत र्वि सिंपूण कब्रह्ािडिं िल र्थल नभ में व्याप्त ।ै र्ोई भी र्ण, र्ोई भी क्षण र्वि र्ी र्ल्पना से परे न ीं ै सूयक र्ी दर्रने तो एर् अिरोध र्े बाद भूल ो िाती ै परिंतु र्वि र्ी आत्मा उसर्ी र्ल्पना रे एर् विरोध र्े बाद भी नई उमिंग र्े सार्थ आगे बढ़ती ैं। दर्सी र्विता र्ी प्रर्ृवत र्वि मनोभाि पर वनभकर र्रती ै तर्था र्वि र्े मनोभाि र्ा वनमाकण उसर्ी पटरवस्थवत, पटरदश्ृ य, पटरिेश,और पटरिार स े ोता ।ै इसी र्े आलोर् में र्वि ियशिंर्र प्रसाद र्े व्यवित्ि र्ा विश्लेषण दर्या िा सर्ता ै।

र्ाशी र्े एर् सिंपन्न साहू पटरिार में िन्मे ियशर्िं र प्रसाद र्ी पटरिार र्ी आस्था शिै मे र्थी। प्रसाद र्े बाल अिस्था र्े ई सिंस्र्ार विवभन्न वशिालयों म ें सिंपन्न हई प्रसाद िी र्े नाम म ें भी वशि र्ा उद्घोष ै वशि र्े प्रवत पाटरिाटरर् झुर्ाि उनर्ी र्विता में भी ददखता ै उनर्ी र्विता शैि दशकन से प्रत्यक्षत: से प्रभावित

।ै बाल्यर्ाल म ैं ी ियशिंर प्रसाद िी र्ा भ्रमण विािन चल र्ी प ावड़यों र्े बीच से ोता ै ि ाि र्ी खूबसूरत, िादियाि, नददयाि, लताएँ, झरने उनर्े मन पर एर् अवमट छाप छोड़ती ।ै बाल्याि्स्था र्ी छाप प्रसाद िी र्ी रचना "र्ानन र्ुसुम" म ें दवृ िगोचर ोती ै। प्रर्ृवत दर् इस मधुटरता रमणीयता र्ो उन् ोंने शधदों र्े माध्यम स े िीिितता प्रदान र्ी ै प्रर्ृवत र्ा वचत्रण र्ते हए वलखत े ैं- "देखो ि ै र्ौन र्ुसुम र्ोमल डाली में दर्य सिंपुटटत िदन ददिार दर्णाली में गोर अिंगों र्ो रे पल्लिों बीच छुपात लज्जाािती मनोज्ञ लता र्ा दश्ृ य ददखाती ै।"1

"तुम् ारा विर्वसत बदन बताता सिं े वमत्र र्ो वनरख र्े र्ैसे हृदय वनष्र्पट र्ा

भाि सुिंदर सरोि ! तुम पर उछल र ा ै।" 2

उपरोि पिंवियाि ियशिंर प्रसाद िारा रवचत प्रर्थमतम रचनाओं म ें स े एर् ।ै िो स्पित: उनर्ी प्रर्ृवत प्रेमी ोने र्ी प्रर्ृवत र्ो दशाकती ै।

ियशिंर प्रसाद र्ी एर् व्यविगत विशेषता र्थी पौरावणर् घटनाओं र्ो निीनता प्रदान र्ना। अपने शधदों म ें शधद बिंद र्ना आरिविभर् वि िीिन र्ी एर् और रचना ै "र्रुणालय"। र्रुणालय म ें प्रसाद िी ने परमदानी तर्था सत्यिादी टरश्चिंद्र र्े िीिन ित्ृ र्ा पद्यआत्मर् िणकन दर्या ै उन् ोंन े पुरानी घटना र्ो प्रर्ृवत र्े सार्थ समागम र्र्े एर् अनूठा उदा रण प्रस्तुत दर्या ।ै म ारािि टरश्चिंद्र सिंध्या र्े समय अपने विचारों र्े सार्थ नौर्ा वि ार र्ो वनर्ले प्रार्ृवतर् दश्ृ य र्ो देखर्र ि मिंत्रमुग्ध ो गए चारों ओर र्ेिल प्रेम शाििंवत और सौंदयक र्ा साम्राज्य विस्तृत पड़ा हआ र्था इस दश्ृ य र्ी र्ल्पना र्र ियशिंर प्रसाद वलखते ैं- "नौर्ा धीरे और िरा धीरे चलो आ तुम् ें क्या िल्दी ै उस और र्ी र् ीं न ीं उत्पात प्रभिंिन र्ा य ाि तुम् ें वलए िाता ै अच्छी चाल से

प्रर्ृवत स चरी सी र्ैसी ै सार्थ में प्रेम सधु ा मी चिंद्र

तुम् ारा दीप ै।"3

इन पिंवियों स े य स्प ोता ै दर् य नौर्ा वि ार पर टरश्चिंद्र न ीं स्ियिं ियशिंर प्रसाद ैं विनर्ी र्ल्पना शधद पास ोती िा र ी ।ै य ियशिंर प्रसाद र्ी प्रर्ृवत प्रेमी हृदय र्ी ओर सिंर्ेत र्ता ै। प्रर्ृवत और प्रेम ियशिंर प्रसाद र्े र्ण-र्ण म ें व्याप्त ै उनर्ी अवधर्ािवधर् रचनाएँ प्रेम र्ेंदद्रत ैं चा े प्रेम प्रर्ृवत स े ो, मातभृ ूवम स े ो, मनुष ्स े ो, प्रर्ृवत र्ी मो र्ता उनर्ी एर् अन्य रचना "झरना" म ें प्रस्फुटटत ोती ै िे वलखते ैं-

"र े र्नी में र् ाि महलदिं ? सरोिर बीच दफला अरहििंद? र्ौन पटरचय

र्था? क्या सिंबिंध? मधुर मधमु य मो न मर्रिंद।"4

प्रसाद िी र्े र्ाव्य म ें विर ि ेदना र्ा भी अनूठा वमश्रण ।ै उनर्ी ि ेदना िीिन र्े पटरत्याग र्ी ओर सिंर्ेत न ीं र्ती बवल् इसमें विश्वास और उसर्े प्रवत प्रमे र्ो भी अवधर् सशि र्ती ।ै प्रसाद िी र्ी ि ेदना दशकन सिंसार म ें र र अपनी भािनाओं र्ो श्रेष्ठतम वशखर पर पहचिं ने र्ा सिंदेश देता ।ै उनर्े अनसु ार

िासना प्रेम ै वनराशा आशा म ें पटरणत ो िाती ।ै प्रसाद र्ी रचना आिंसू एर् आदश क रचना ै उनर्ी एर् म ानतम र्लाृवत र्ा उदा रण ।ै य िेदना और विि य र्ा र्ाव्य ोत े हए भी मानस पटल पर एर् आशा र्ी दर्पण छोडती ।ै इसर्ा विर्ृवत में विर िेदना र्ा वचत्रण असाधारण ै इस रचना में प्रसाद िी ने ददखाया ै दर् प्रेमी प्रेयसी से र्ेिल शारीटरर् रूप र्े वलए प्रेम न ीं दर्या ै बवल् उसर्ा प्रेम वचर सत्य, वचर सुिंदर, और वचर र्ावलर् ।ै आिंसू में प्रसाद र्ी पीडा िैस उनर्े अपने भीतर र्ी व्यर्था ै िो शधद र्ा रूप लेर्र प्रस्फुटटत ोती ै सािंसाटरर् मो पीडा र्े आदशक म ें ि े वलखते ैं- "मादर् र्थी मो मयी र्थी मन ब लाने र्ी क्रीडा अब हदय व ला देती ै

ि मधरु प्रेम र्ी पीडा।"5

आिंसू में ी प्रसाद एर् म ान दाशकवनर् र्ी भूवमर्ा वनभाते ।ैं य उनर्ी व्यविगत अनुभि र्ा प्रवत फलन ो सर्ता ।ै उनर्े अनुसार एर् स्तर पर आर्र सखु दखु म ें र्ोई अिंतर न ीं र िाता इस सिंदभ क में उनर्ी पिंवियािं ैं-

"मानि िीिन र्ी िेदी पर पटरचय ो विर

वमलन र्ा

दखु सुख दोनों नाचेंगे

ै खले आिंख र्ा मन र्ा।"6

ियशिंर्र प्रसाद र्ा व्यवित्ि अवितीय ै ऐसा लगता ै दर् उनर्े हृदय म ें रि न ीं प्रेम रस प्राि त ोता ै"ल र" में एर् प्रेमी र्े रूप में वलखते ैं-

"देखना लूिं इतनी ी तो ै इच्छा लो वसर झुर्ा हआ। र्ोमल दर्पण

उिंगवलयों से ढर् दोगे य द्रग खुला हआ दफर र् दोगे प चानो तो मैं हू िं

र्ौन बताओ तो दर्िंतु उन् ीं अधरों से प ले उनर्ी सिं ी दबाि

तो।"7

ियशिंर्र प्रसाद श्रष्ठे र्ृवत र्ामायनी य पुरानी र्र्थाओं पर आधाटरत ।ैं परित ु आधुवनर् र्ाव्य प्रसाद िी ने इसे अध्याय र्ो मनुष्य र्ी ि ृवत्तयों र्ा आधार देर्र सिाया और सिंिारा ै। इस र्ाव्य र्े मलू पात्र तो मनु, श्रद्धा, औ इडा ।ै परितु मन ु र्ोई और न ीं प्रसाद िी र्ा आत्म अवभव्यि र्ा एर् माध्यम ै मनु आदद पुरुष अिश्य परितु आत्मा मनु दर् न ीं प्रसाद िी र्ी ै इस र्े सिंदभ क म ें मुविबोध ने "र्ामायनी: एर् पुनर्िकचार" म ें वलखा ै- "प्रसाद िी र्े अिंत र्रण म ें

िो एर् िीवित और िीििंत छटपटात े हई दुखती हई ग्रिंवर्थ ै अभयािंतर ग्रिंवर्थ अपन े पूरे अपन े सिंपूण क ज्ञान अपने पूरे अिा े और अपने सिंपूण क भाई और ब न र्ी उलझन र्े सार्थ र्ामायनी प्रर्ट हई ै इस अभयािंतर ग्रिंवर्थ र्ा प्रवतवनवधत्ि र्रने िाला पात्र मनु ।ै"8

वनसिंदे र्ामायनी प्रसाद िी र्ी र्ालियी रचना ै इसर्े माध्यम से उन् ोंने अपनी सिंपूण क िेदना र्रुणा प्रेम आर्षणक विर र्ो शधद र्े अटूट िाल में वपरोया ।ै ियशिंर्र प्रसाद र्े पात्रों र्ी विशेषता ै उसर्ा

प्रभाि उनर्े र्ायों र्ी एर् प्रमखु विशेषता ।ै नारी में मानि िीिन र्ा सच्चा सोंदयक वनव त ।ैं नारी र्ी प्रवतष्ठा र्ो उन् ोंने शीषक पर स्थावपत दर्या उन् ोंने अपने र्ाव्य र्ामायनी में ददखाया ै दर् नारी पुरुष र्ी शवि ज्योवत और वसवद्ध र्ा प्रतीर् ैनारी र्ो संबोवधत र्रते हए ि े र् त े ैंदर्-

“नारी तुम र्ेिल श्रद्धा ो विश्वास रित नग पदतल

में पीयूष स्त्रोत सी ब ा र्रो

िीिन र्े सुिंदर समतल म।ें“9

उनर्ी रचना आसिं ू में भी उन् ोंने नारी र्ो र्ेंद्र म ें रखा ।ै र्ामायनी म ें श्रद्धा र्े सौंदय क र्ा वचत्रण दर्या ै तो आसिं ू में उनर्ी अपनी नावयर्ा ै विसर्े यौिन र्ी मो र्ता मधुटरता र्ो प्रवतवष्ठत दर्या। आंिस ू में ि े वलखते ैं-

“तुम सत्य र े वचर सुिंदर मेरे इस वमथ्य िग

र्े थे र्ेिल िीिन संगी र्े ल्याण र्लता

इस मागिं र्े।“10

नारी आददर्ाल में पूिनीय थीं परित ु मध्यर्ाल म ें उनर्ी प्रवतष्ठा धूवमल ो चुर्ी थीं नारी भोग विलास र्ा साधन बन चुर्ी थीं आधुवनर् र्ाल में छायािादी र्वियों ने उनर्ी खोई प्रवतष्ठा र्ो पुण े ददलाने र्ा प्रयत्न दर्या। ियशंर्र प्रसाद म ें नारी र्ा गुणगान र र्े तत्र्ालीन सामाविर् पटरवस्थवतयों पर र्टाक्ष दर्या उन् ोंने अपनी रचनाओं र्े माध्यम स े पुरुषिादी समाि म ें नारी र्ी दशा ददशा सुधारने र्े वलए उनर्े प्रेम सौंदयक र्ा बखान दर्या ।ै तादर् पुरुष र्ी सोच म ें पटरितकन ो तथा सामाविर् रूप स े नाटरयों र्ो मान सम्मान प्रवतष्ठा प्राप्त ो स्पित: ियशंर्र प्रसाद र्ा व्यवित्ि एर् र्वि र्े रूप में प्रर्ावशत ।ै विन् ोंने ना वसफक नारी र्े सौंदयक र्ा िणकन दर्या ैअवपतु समाि र्ी दवृ ि में उन् ें यथोवचत स्थान ददलाने में भी योगदान ददया ।ै ियशंर्र प्रसाद र्ा समय र्ाल भारत र्ी स्िाधीनता आंदोलन र्ा समय र्ाल र ा ै इन् ोंने भी अन्य र्वियों र्ी तर देश र्ी स्ितिंत्रता पर भी अपनी र्लम चलाई ।ै तथा दशे र्े ििानों र्ो शुद्धता र्ी ओर आर्ृि र्रते हए ििानों र्ी रगों में स्ितिंत्रता र्ी भाििना र्ा उन्मषे र्रते ।ैं ि े वलखत े ैं-

“व माद्र तुिंग श्रृिंग से प्रबद्धु शद्धु भारती स्ियंप्रभा

समज्ज्िला स्ितिंत्रता पुर्ारती अमात्य िीर पुत्र ो दढृ

प्रवतज्ञा सोच लो प्रशस्त पुण्य पिंत ै बढ़ े चलो बढ़ े चलो।“11

इन पिंवियों में एर् आदशिक ादी स्ितिंत्रता प्रेमी र्वि र्ी छवि दवृ

िगोचर ोती ।ै इसमें प्रर्ट ोता ै दर् य र्वि वसफक प्रमे र्ो ी

र्ेंद्र म ें रखर्र मेशा र्विता न ीं र्र सर्ता अवपतु िब

आिश्यर्ता ोती ै तो अपने देश समाि पर भी र्विताएं र्र सर्ता ।ै

ियशिंर प्रसाद छायाििाद र्े दर् स्तिंभ र्े रूप म ेिं ििाने िाते ैं छायाििाद र्े अन्य स्तभ सुवमत्रानिंदन पिंत ,वनराला और म ादेिी िमा क ।ै छायाििाद र्े मलू में ी प्रमे र ा ै इसर्ी प्रिवृत्त स्िच्छिंदताििाद र्ी प्रिवृत्त र ी ै सभी र्वियों र्ी रचनाओं स े प्रेम रस र्ी बरसात ोती ।ै परित ु ियशिंर प्रसाद इन सभी र्े समान ोते हए भी इन सब से अलग ।ै ियशर्िं र प्रसाद र्े र्ाव्यगत विशेषता और उसर्ा इवत ास स े प्रेटरत ोते ैं ऐवत ावसर् विषय र्ा चयन र उसम ें आधुवनर् शधदों और दश्ृ यों र्ा समागम र निीनता प्रदान रना उनर्ी प्रमुख विशषे ता थी। प्रसाद िी र्े साव त्य र्ी तर उनर्ी भाषा में भी विविध विधाएिं दवृ िगोचर ोती ।ै उनर्ी भाषा र्ा स्िरूप विश्व र्े अनुसार ी घटटत हआ ै प्रसाद िी ने अपनी भाषा र्ा श्रृिंगार सिंस्र्ृत में तत्सम शधदों स े दर्या ।ै इनर्ी भाषा शैली प्रधान विशेषता ै भाि ों और विचारों र्े अनुर्ूल शधदों र्ा प्रयोग दर्या गया ै प्रसाद िी ने मु ाि रों और लोर्ोवियों र्ा प्रयोग न ीं र्े बराबर दर्या ।ै वनष्र्षकत: ियशिंर प्रसाद र्ा व्यवित्ि अवितीय ।ैं इनर्ी रचनाओं म ें इनर्े व्यवित्ि र्ी स्पि झलर् ददखती ै प्रेम इनर्ी र्विताओं र्े णि-णि में व्याप्त ।ै चा े प्रेम प्रर्ृवत र्े वल,ए मनुष्य र्े वलए, उनर्े हृदय में ब ने िाला रि रि न ीं प्रेम रस ै और य प्रेम म ें शधदों म ें पटरवणत ोता ।ै मनमो र्ारी चरम सीमा र्ो उद्घाटटत रती। ियशिंर प्रसाद र्ा नारी सौंदयक वचत्रण अनुपम ।ै उन् ोंने छायाििाद र्ी प्रवतष्ठा र्ो शीषक पर स्थावपत दर्या ।ै ऐसा र् न े में र्ोई दो राय न ीं ो सर्ती ै दर् ियशर्िं र प्रसाद छायाििाद र्ी उपि ै बवल् अगर ह दिं ी र्विता र्े इवत ास म ेंछायाििाद एर् दौर ै तो प्रसादी र्ी रचनाओं से ।ै

सिंदभक सूची:

1.ियशिंर प्रसाद, र्ानन र्ुसुम (रिनीगिंधा), पष्ृठ स.िं23

2.ियशिंर प्रसाद ,र्ानन र्ुसुम (सरोि), पृष्ठ स.िं24

3.ियशिंर प्रसाद रुणालय

4.ियशिंर प्रसाद, झरना (पटरचय), पृष्ठ सिं.8

5.प्रसाद और उनर्ा आिंसू, पृष्ठ स.िं21

6. ियशिंर प्रसाद, आिंस,ू पृष्ठ स.िं46

7.ियशिंर प्रसाद ,ल र

8.मुविबोध, र्ामायनी: एर् पुनमूकल्यािंर्न, पृष्ठ स.िं8

9.ियशिंर प्रसाद र्ामायनी (लज्जा सगक), पृष्ठ स.िं44

10.प्रो. सतीश र्ुमार, प्रसाद और उनर्ा आिंस,ू पष्ृठ स.िं23

11.ियशिंर प्रसाद, चिंद्रगुप्त (चतुथक अिंर्), पृष्ठ स.िं138